सरस्वती विद्या मंदिर, तिलौथू (रोहतास) के वार्षिकोत्सव में महामहिम राज्यपाल श्री राम नाथ कोविन्द का संबोधन

दिनांक–23.11.2016, समय–पूर्वा॰ 11:30 बजे, स्थान–तिलौथू, रोहतास)

'विद्या भारती' के पूर्व महासचिव श्री रमेन्द्र राय जी, जे॰बी॰एल॰ एग्रो इंडस्ट्रीज के अध्यक्ष श्री डी॰एन॰ झुनझुनवाला जी, श्री सीमेंट लिमिटेड के मुख्य कार्यकारी श्री रवि तिवारी जी, श्री शैलेन्द्र ओझा जी, विद्यालय के प्राचार्य श्री जंगलेश प्रसाद चौरसिया जी, मीडिया–प्रतिनिधिगण, प्यारे विद्यार्थियों, देवियों एवं सज्जनों!!

सरस्वती विद्या मंदिर, तिलौथू के वार्षिकोत्सव में उपस्थित होकर मुझे हार्दिक प्रसन्नता हुई है। मुझे बताया गया है कि इस विद्यालय के लिए प्रमुख भू–दाता स्व॰ मधुर सिन्हा की भी आज जयंती है। मित्रों, हमारी भारतीय संस्कृति में दान की बड़ी महत्ता रही है। मनुष्य अपनी प्रसिद्धि, परमार्थ, मानवता के प्रति अपनी सेवा–भावना, नैतिक दायित्व या धार्मिक निष्ठा आदि के कारण विभिन्न प्रकार के दान के लिए तत्पर होता है। विभिन्न दानों की श्रेणी में शिक्षा–दान भी अत्यन्त महत्वपूर्ण दान होता है। स्व॰ मधुर सिन्हा ने इस क्षेत्र में शिक्षा के विकास हेतु अपनी जमीन का दान इस विद्यालय के लिए किया है। आज उनकी भी जयंती है। मैं उनका आदरपूर्वक स्मरण करता हूँ।

मित्रों, किसी भी संस्था का जब ''वार्षिकोत्सव'' आयोजित किया जाता है, तो इस अवसर पर संस्था की प्रगति–यात्रा के विभिन्न सोपानों और उसकी उपलब्धियों पर गौरवान्वित हुआ जाता है। किन्तु, उपलब्धियों पर गौरव–बोध के साथ–साथ, आगे की चुनौतियों पर भी गंभीरता से विचार जरूरी होता है। आप सबको इस विद्यालय के समग्र विकास हेतु दृढ़संकल्पित होना चाहिए।

प्यारे बच्चों! शिक्षा का उद्देश्य सिर्फ डिग्री लेकर अच्छा रोजगार प्राप्त करना मात्र नहीं है। मनुष्य को शिक्षा से संस्कार की प्राप्ति होती है, संस्कृति का बोध होता है और अपने राष्ट्र के प्रति मन में आस्था जगती है। महान संत स्वामी विवेकानन्द का कथन है कि–''जो शिक्षा मनुष्य को जीवन–संग्राम में उतरने में समर्थ नहीं बना सकती, मनुष्य में चरित्र–बल, परहित भावना तथा सिंह के समान साहस का भाव नहीं जगा सकती, उसका कोई महत्व नहीं है। वस्तुतः हमें ऐसी शिक्षा की आवश्यकता है, जिससे चरित्र–निर्माण हो, मानसिक शक्ति बढ़े, बुद्धि विकसित हो और देश के युवक अपने पैरों पर खड़ा होना सीखें।'' स्पष्ट है, स्वामी विवेकानन्द जी एक आदर्श विद्यार्थी में स्वाभिमान, साहस, चरित्र–बल और आत्मनिर्भरता जैसे गुणों का समाहार आवश्यक मानते हैं। स्वामी जी शिक्षक के लिए आदर्श गुणों का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि–''वे ही सच्चे गुरू हैं, जो अपने शिष्य की प्रवृत्ति के अनुसार, उसके अन्तर्निहित गुणों के विकास का प्रयास करते हैं।'' अर्थात् सच्चा गुरू वही है, जो विद्यार्थी को सिखाने के लिए विद्यार्थी की ही मनोभूमि में उतर आए और अपनी आत्मा अपने शिष्य की आत्मा के साथ एकरूप कर उसे सम्यक् ज्ञान प्रदान करे। आप सबों ने कबीरदास जी का एक दोहा जरूर पढ़ा होगा। वह दोहा है–

''गुरू कुम्हार शिष कुंभ है,
गढ़ि–गढ़ि काढ़ै खोट।
अंतर हाथ सहार दै,
बाहर बाहै चोट।।''

—अर्थात् गुरू कुम्हार की तरह हैं। शिष्य मिट्टी के कच्चे घड़े के समान हैं। जिस तरह घड़े को सुन्दर बनाने के लिए, अंदर हाथ डालकर बाहर से थाप मारा जाता है, ठीक उसी प्रकार शिष्य को कठोर अनुशासन में रखकर, अंतर से उसके प्रति प्रेम—भावना रखते हुए, उसकी बुराइयों को दूर कर संसार के लायक उसे सुन्दर—सुयोग्य बनाकर, देश और समाज के समक्ष गुरूजन प्रस्तुत करते हैं।

प्यारे बच्चों, आप जो ज्ञानार्जन कर रहे हो, उसमें एकाग्रता की बहुत जरूरत है। मैं, तुम्हें महान् वैज्ञानिक आइन्स्टीन के जीवन का एक प्रसंग सुनाना चाहता हूँ। आइन्स्टीन एक बार अपने देश में रेल—यात्रा कर रहे थे। यात्रा के दौरान टिकट—चेकर ने जब उनके पास आकर टिकट माँगा, तो वे अपने कोट, पैंट, शर्ट के पॉकेट ढूंढने लगे। बहुत प्रयास के बाद भी जब टिकट नही मिला, तो वे अत्यन्त चिन्तित होने लगे। उनकी बेचैनी एक दूसरे पैसेन्जर ने देखी, जो उन्हें पहचानता भी था। उसने टिकट—चेकर से कहा—''टिकट निरीक्षक बाबू, आप इन्हें नही पहचानते? ये अपने देश के महान वैज्ञानिक आइन्स्टीन महोदय हैं''। टिकट—चेकर बड़ा शर्मिन्दा हुआ और उसने आइन्सटीन से कहा—''महोदय, मुझसे गलती हो गई। मेरा गलती है कि मैं आपको नही पहचान सका। आप कभी भी रेल—यात्रा संबंधी नियमों का उल्लंघन नही करेंगे।'' आइन्सटीन ने कहा—''अरे भाई! गलती तो मेरी है कि मैं टिकट अपनी जेब में ठीक से सँभालकर नही रख पाया हूँ। लेकिन जानते हो, मेरी परेशानी आपको टिकट नहीं दिखाने से ही हल नहीं होने वाली। मेरी परेशानी है कि मुझे किस स्टेशन पर उतरना है, यह मैं नहीं जानता। क्योंकि टिकट पर मेरा गंतव्य स्टेशन का नाम वर्णित था। मित्रों! आइंस्टीन के जीवन का यह प्रसंग यह बताता है कि छोटे या बड़े किसी भी लक्ष्य के प्रति हममें कितनी तल्लीनता और एकाग्रता आवश्यक है। आइन्स्टीन ट्रेन में बैठे हुए भी अपनी वैज्ञानिक

सोच और महान लक्ष्य को प्राप्त करने में इतने निमग्न थे कि अपना छोटा–सा लक्ष्य अर्थात् किस स्टेशन पर उतरना है, वह भी याद नहीं रख सके। मेरा अनुरोध होगा कि आप बड़े लक्ष्य हासिल करने के मार्ग पर आगे बढ़ते हुए भी, अपने छोटे–छोटे लक्ष्यों व छोटी–छोटी व्यावहारिक बातों का भी पूरा ख्याल रखें। मेरा सुझाव होगा कि आप पाठ्यक्रम की पुस्तकों के साथ–साथ, महापुरूषों की जीवनियाँ, भारतीय इतिहास की विरासतों और संस्कृति से जुड़ी बातों का भी गहन अध्ययन करते रहें। आप कला, विज्ञान, वाणिज्य, विधि–जिस किसी भी संकाय में विशेषज्ञता हासिल करना चाहते है, उसका विशेष अध्ययन करते रहें। परन्तु भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति, आधुनिक विज्ञान की उपलब्धियों एवं विश्व के महत्वपूर्ण घटनाक्रमों पर भी अपनी खुली नजर जरूर रखें, ताकि आपका सर्वांगीण विकास होता रहे। आधुनिक युग ज्ञान–विज्ञान और तकनीकी विकास का युग है। 'सूचना क्रांति' और 'तकनीकी विकास' के आज के युग में आप वैज्ञानिक विकासपरक गतिविधियों से पृथक् रहकर समुचित रूप से लाभान्वित नहीं हो सकते। किन्तु, साथ ही मेरा अनुरोध आपसे यह भी होगा कि आप वैज्ञानिक और भौतिक विकास के इस दौर में भी अपने राष्ट्र की आध्यात्मिक और सांस्कृतिक ज्ञान–सम्पदा का भी पूरा ख्याल रखें। हम इसी सम्पदा के बल पर विश्व–गुरू थे और आगे भी हमारा यही वैभव पूरी दुनियाँ का हमें सिरमौर बनाएगा।

आज आपके इस प्रतिष्ठित विद्यालय के 'वार्षिकोत्सव' के अवसर पर मैं पुनः आप सबको हार्दिक बधाई देता हूँ। मुझे बताया गया है कि आपके विद्यालय के कई तेजस्वी छात्र, सेवा के विभिन्न क्षेत्रों में कार्यरत रहकर, इस विद्यालय और इस इलाके का नाम रोशन कर रहे हैं। इस विद्यालय में अध्ययनरत छात्रों को उनसे प्रेरणा लेनी चाहिए।

आइए, हम सभी मिलकर एक ऐसे सुन्दर प्रान्त और देश के नवनिर्माण का संकल्प लें और भारत के संविधान में वर्णित लक्ष्यों, जैसे–समाज में सुख–शांति, विद्या, साधना, सद्भावना, प्रेम, त्याग, वंधुत्व, समानता और न्याय को प्राप्त करने में सदैव तत्पर रहें। एक बार पुनः आप सबको बहुत–बहुत धन्यवाद!

जय हिन्द!!

***

प्रस्तुति–जन–सम्पर्क शाखा, राजभवन, पटना।